एक अंधविश्वास

तीन बेटों के बाद जन्मी बेटी (तेंतर) की कहानी

हमारे देश में अंधविश्वासों की कमी नहीं है। तेंतर यानी तीन बेटों के बाद बेटी का जन्म अशुभ होता है, यह अंधविश्वास उत्तर भारत में प्रचलित है। प्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचंद की कहानी तेंतर पर आधारित यह संक्षिप्त प्रस्तुति है। हमें इन अंधविश्वासों से छुटकारा पाना है।
—संपादिका

आखिर वही हुआ जिसका डर था। तीन लड़कों के बाद लड़की जन्मी। मां सौर में सूख गई, बाप बाहर आंगन में सूख गए और बूढ़ी दादी सौर के दरवाज़े पर बुड़बुड़ा रही थी—"अनर्थ, महाअनर्थ, भगवान ही कुशल करे। यह बेटी नहीं राक्षसी है। इस अभागिन को इसी घर में आना था तो कुछ साल पहले आ जाती या फिर न आती।"

दामोदर दास पढ़े-लिखे आदमी थे और सरकारी नौकरी करते थे, पर मन में जमे संस्कारों को कैसे मिटा देते। पता नहीं नई जन्मी लड़की मां को लेकर जाएगी या बाप को या अपने आप को। दादी लड़की को कोसने लगी—"कलमुंही है, किसी बांझ के घर जाती तो उसके दिन फिर जाते।"

दामोदर दास दिल में तो घबराए हुए थे, पर अपनी मां को समझाने लगे—"तेंतर-वेंतर कुछ नहीं। भगवान चाहेंगे तो कुशल ही होगी। गानेवालियों को बुलवा लो वरना पड़ोसी और बिरादरी वाले कहेंगे कि लड़के होने पर तो बहुत इतराते थे, अब लड़की हुई तो सन्नाटा छा गया।"

दादी—"बेटा! तुझे याद नहीं। तेरे दादा तेंतर के जन्मते ही मरे थे। तब से तेंतर के डर से मेरा कलेजा कांप उठता है।"

दामोदर—"इस कष्ट का कोई उपाय तो होगा?"

दादी—"पंडित कुछ उपाय बता देते हैं, पर उससे कुछ होता-हवाता नहीं है।"

दादी नहीं चाहती थी कि बेटे का पैसा खर्च हो। बोली—"लड़की तंदुरुस्त है। रंग गोरा है, लंबी नाक है। नहलाते समय रोई भी नहीं, ये अच्छे लक्षण नहीं हैं।"

दामोदर—"गाना बजाना न करवाने से कष्ट मिट तो नहीं जाएगा।"

दाई (सौर से)—"बहूजी कहती हैं कि गाना-वाना कराने की जरूरत नहीं है।"

दादी—"उससे कहो, चुप रहे। वह देवी-देवता पूजने नहीं गई, तभी तो यह हुआ। दादी ने मन मारकर गानेवालियों को बुला लिया और पड़ोसिनों को भी।

तीनों भाइयों के मन में बड़ा चाव था। उन्हें गुड़िया जैसी बहन मिल गई थी। सब रस्में हुईं पर खुशी से नहीं। लड़की दिनोंदिन कमज़ोर होती गई। मां उसे दोनों समय अफीम खिला देती ताकि वह रोए नहीं। उसे सिर्फ थोड़ा ऊपरी दूध दिया जाता। बच्ची की मां को दूध मुश्किल से उतरता था पर हर बार जन्मे लड़के को प्यार से छाती से लगाती तो दूध उतर ही आता था। इस बार उसने कोशिश नहीं की। बड़ा भाई उसे बाहर घुमाने ले जाना चाहता तो मां झिड़क देती।

तीन-चार महीने हो गए। एक दिन रात को दामोदर दास पानी पीने उठे तो देखा बच्ची जगी है और अपना अंगूठा चूस रही है। उसका मुंह मुर्झाया हुआ था, पर वह रोती न थी। बाबू साहब को उस पर दया आई। उन्होंने उसे उठाकर प्यार किया और दूसरे दिन सुबह उठाकर बाहर लाए।

पड़ोसी की बकरी सामने मैदान में चर रही थी। उन्होंने बड़े लड़के से कहा—"सिद्धू ! बकरी को पकड़ ला। इस बच्ची को दूध पिलाएंगे।"

बच्चों को खेल हो गया। वे तुरंत बकरी पकड़ लाए। पिता ने बच्ची का मुंह बकरी के स्तन से लगा दिया। बच्ची दूध पीने लगी। उसका मुंह खिल उठा। आज शायद पहली बार उसकी भूख मिटी थी। वह पिता की गोद में हाथ-पैर चलाकर खेलने लगी। लड़कों ने भी उसे खूब नचाया-कुदाया। सिद्धू उसे दिन में दो-तीन बार दूध पिलाने लगा। बच्ची की मां उसे देखकर ताज्जुब करती। किसी से कुछ कह तो सकती नहीं थी, पर दिल में डरती रहती कि अब बच्ची तो मरेगी नहीं। हमीं में से किसी के सिर पड़ेगी।

सास ने एक दिन बहू को उलाहना दिया—"तुम कुछ नहीं करोगी तो कौन करेगा ?"

बहू—"अम्मा जी ! भगवान जानता है जो मैं इसे दूध पिलाती हूं !"

सास—"मैं मना थोड़े ही करती हूं। मुफ्त में अपने सिर पाप क्यों लूं ?" पर दादी की चिंता मां से ज्यादा थी। उसे लगता जैसे सांप पाला जा रहा है। वह बच्ची को आंख उठाकर भी नहीं देखती थी। उसके मन में यह बात उठने लगी कि कुछ हो जाए वरना बहू सोचेगी कि मैं झूठ बोलती थी। वह यह तो नहीं चाहती थी कि कोई मर जाए, पर यह जरूर चाहती थी कि कुछ अमंगल हो जाए।

बच्ची की मां का प्रेम उससे धीरे-धीरे बढ़ने लगा। मन में मनाती किसी तरह साल कट जाए तो बला टल जाएगी। पति और बच्चे का बेटी के प्रति प्रेम देखकर उसे भी बढ़ावा मिलता पर दिल मसोस कर रह जाती, खुले रूप से प्यार नहीं कर पाती थी। न हंसते बनता था, न रोते।

इस तरह दो महीने और बीत गए। कुछ अमंगल नहीं हुआ। अब सास के पेट में चूहे दौड़ने लगे। सोचती, बहू को चार दिन बुखार भी नहीं आया, न बहू के मायके से कोई बुरा समाचार आया। आखिर में अपनी शंका साबित करने के लिए उसने एक तरकीब सोची। एक दिन दामोदर दास दफ्तर से आए तो देखा मां खाट पर बेहोश पड़ी है और पत्नी अंगीठी की आग से सास की छाती सेंक रही है।

घबराकर पूछा—"अम्मा को क्या हुआ ?"

पत्नी—"दुपहर से कलेजे में दर्द बताती हैं। बहुत तड़प रही हैं।"

दामोदर—"मैं डाक्टर को बुला लाऊं ? देर करने से शायद बीमारी बढ़ जाए। अम्मा ! कैसी तबियत है ?"

बूढ़ी ने कराहते हुए आंख खोली और बोली—"बेटा ! तुम आ गए। अब मैं न बचूंगी। ऐसा दर्द तो कभी नहीं हुआ।"

पत्नी—"न जाने किस मनहूस घड़ी में यह छोकरी पैदा हुई थी ?"

सास—"बहू ! भगवान की इच्छा है। यह क्या जाने ! मैं मर जाऊं तो इसे कष्ट मत देना। किसी के सिर तो जाती ही, मेरे ही सिर सही। हाय भगवान ! अब मैं नहीं बचूंगी।"

दामोदर—"डाक्टर को बुला लाता हूं !"

"नहीं बेटा ! डाक्टर के पास मत जा। यहीं मेरे पास बैठकर भागवत का पाठ कर।"

दामोदर—"तेंतर है बुरी चीज, मैं समझता था कि सब ढकोसला है।"

पत्नी—"इसी से मैं उसे मुंह नहीं लगाती थी।"

सास—"बच्चों को आराम से रखना, किसी दूसरे के सिर जाती तो न जाने क्या होता राम ! भगवान ने मेरी विनती सुन ली। हाय ! हाय ! !"

दामोदार को बड़ा दुःख था कि शायद अम्मा नहीं बचेंगी। कितनी तकलीफों से विधवा होने के बाद पाला-पोसा, पढ़ाया लिखाया। उनकी चलती तो मां के बदले तेंतर को हरगिज स्वीकार न करते।

रात को पत्नी रोटी बनाने चली तो सास से बोली —"अम्मा जी ! तुम्हारे लिए साबूदाना बना दूं ?"

सास व्यंग्य से बोली—"बेटी ! अन्न बिना न मारो, पूरी-कचौड़ी बनाओ। मरना ही है तो खाने को तरस कर क्यों मरूं। थोड़ी मलाई भी दे देना और केले भी मंगवा लेना।" भोजन कर पीड़ा कुछ शांत हो गई, पर आधा घंटे बाद फिर ज़ोर से होने लगी। आधी रात जाकर आंख लगी।
एक सप्ताह तक बूढ़ी की यही हालत रही।
दिनभर तड़पती पर भोजन के समय वेदना कम हो जाती। दामोदर पंखा झलते और गीता सुनाते।
घर की महरी ने मौहल्ले भर में खबर फैला दी।
पड़ोसिनें आईं तो सारा इल्ज़ाम बच्ची के सिर गया।

एक हफ्ते बाद बुढ़िया का कष्ट खत्म हुआ।
वह खाट छोड़ उठ खड़ी हुई। मरने में कोई कसर नहीं बची थी। वह तो कहो पुरखों का पुण्य-प्रताप सामने आ गया। दुर्गापाठ हुआ। ब्राह्मणों को गोदान दिया गया तब जाकर संकट कटा।
तेंतर घर के लिए अशुभ नहीं थी। □